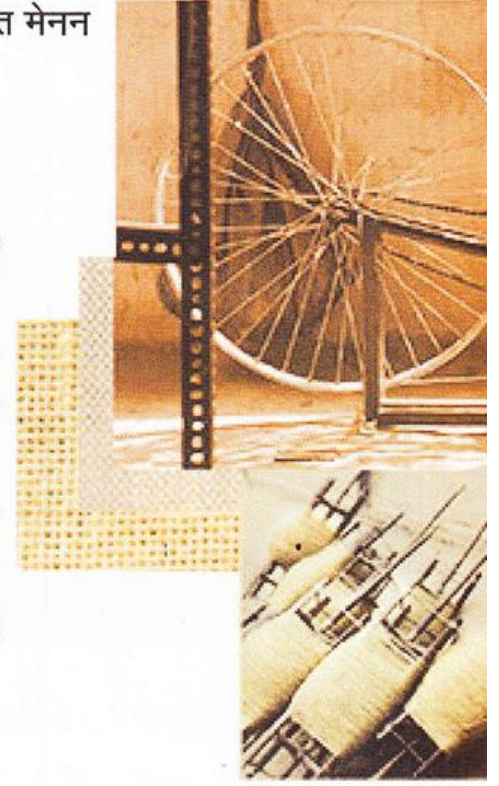


पर्यटन के माध्यम से तैयार होगा ग्रामीण सांस्कृतिक पथ

-हेमंत मेनन

ग्रामीण भारत में उत्कृष्ट शिल्प कौशल से लेकर जीवंत प्रदर्शन कला तक, सांस्कृतिक परंपराओं की विशाल संपदा मौजूद है। इन खजानों के संरक्षण एवं संवर्धन में पर्यटन पथ की अहम भूमिका है। देश भर में मौजूद सांस्कृतिक पर्यटन मार्ग भारत को एकसूत्र में पिरोने के साथ रोजगार, जीवन स्तर की गुणवत्ता के भी महत्वपूर्ण कारक हैं। ये रास्ते स्थानीय विरासत को सहेजने के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास को प्रोत्साहित कर सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि पर्यटन की भौतिक संरचनाओं की पहुँच को आसान बनाने के साथ उसकी सुंदरता के वर्णन की सहज और सरल व्यवस्था हो। यह सामुदायिक भागीदारी से ही संभव है। देश के अलग-अलग हिस्सों में पर्यटन केंद्रों के विकास में ग्रामीण सांस्कृतिक पथ अत्यंत प्रभावी केंद्र बनकर उभरे हैं।

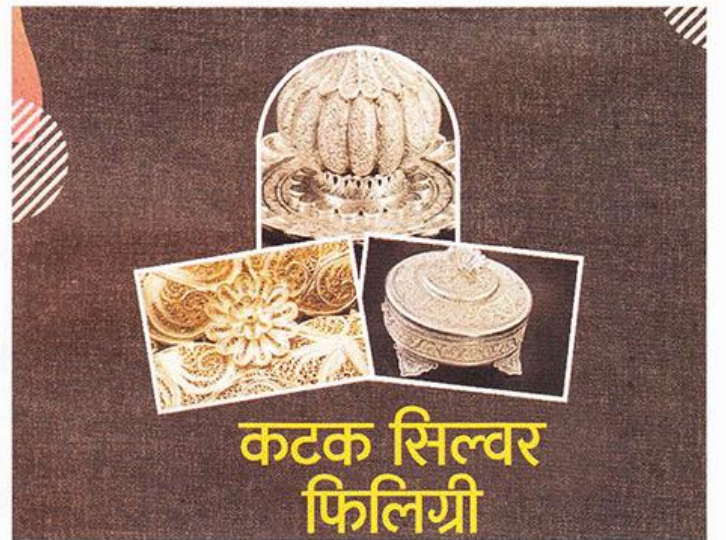


पीढ़ियों से चली आ रही काशी और कांचीपुरम की उत्कृष्ट हथकरघा बुनाई से लेकर गाँव के चौराहों पर गूँजने वाले जीवंत लोक संगीत तक ग्रामीण सांस्कृतिक पथ के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। हालांकि, वैश्वीकरण और बदलती जीवनशैली से इन परंपराओं को पर्यटन के मानचित्र पर लाने की आवश्यकता है। एकीकृत दृष्टिकोण के साथ विकसित सांस्कृतिक पर्यटन पथ को प्रभावी प्रचार के जरिए व्यापक अवसर के क्षेत्र में तब्दील किया जा सकता है। यह सांस्कृतिक पथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई जान फूंकने के साथ नई पीढ़ी को स्थानीय विरासत पर गर्व की प्रेरणा भी देते हैं।

सांस्कृतिक पर्यटन पथों का बहुआयामी महत्व

ग्रामीण सांस्कृतिक पथ आगंतुकों को ग्रामीण क्षेत्र की अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान को दिल से जोड़ते हैं। ये रास्ते स्थानीय शिल्प, पारंपरिक कला रूपों, विरासत स्थलों और गहन सांस्कृतिक अनुभवों से लोगों के जीवन

में नई ऊर्जा का संचार करते हैं। इन सांस्कृतिक पर्यटन पथ को समृद्ध और प्रामाणिक समझ देने के लिए डिजाइन किया गया है। ग्रामीण समुदायों के लिए इन पगडंडियों का बहुआयामी महत्व है। आर्थिक रूप से यह नई आजीविकाएं



कटक सिल्वर फिलिग्री

लेखक कला और संस्कृति पर एक नियमित स्तंभकार हैं और स्पिक मैके के राष्ट्रीय समन्वयक हैं। ई-मेल : hemanth@spicmacay.com



सृजित करते हैं। इससे स्थानीय कारीगरों को आर्थिक और सामाजिक उत्थान का जरिया मिलता है। यहां सामाजिक रूप से सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं को संरक्षित करके सामुदायिक गौरव की भावना पैदा करते हैं।

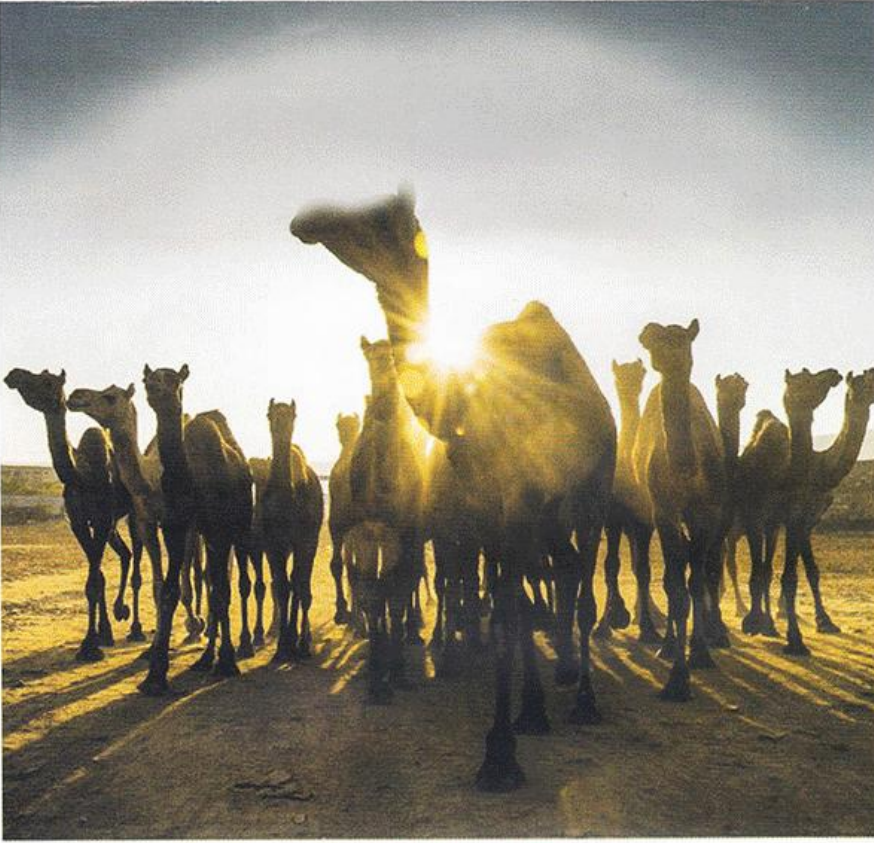
एक सफल सांस्कृतिक पथ का निर्माण केवल कुछ स्थलों को पर्यटन मानचित्र पर जोड़ने से कहीं अधिक होता है। इसके लिए किसी क्षेत्र की अद्वितीय सांस्कृतिक संपत्तियों की गहरी समझ और एक सम्मोहक कथा के निर्माण की आवश्यकता होती है। इसमें निम्नलिखित शामिल हैं:

भौतिक और अमूर्त विरासत का साझा पर्यटन

स्थल: पर्यटन पथ में भौतिक और प्रथाओं के रूप में मौजूद दोनों ही सांस्कृतिक संपत्तियां शामिल होनी चाहिए। किसी भी जगह के ऐतिहासिक स्मारक, मंदिर और पारंपरिक गाँव की वास्तुकला अतीत की झलक पेश करती है। अमूर्त विरासत पीढ़ियों से चली आ रहे सांस्कृतिक अनुभूति को व्यक्त करती है। कच्छ में मास्टर बुनकरों के कौशल, केरल में थेय्यम प्रदर्शन की स्पंदित लय, या सदियों पुरानी

आयुर्वेदिक चिकित्सकों का ज्ञान। प्राकृतिक परिदृश्य अपने आप में एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संपत्ति हो सकता है, जिसमें पवित्र उपवन, झरने, या कृषि पद्धतियाँ स्थानीय परंपराओं के साथ गहराई से जुड़ी हुई हैं। इस दिशा में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई सर्वश्रेष्ठ प्रथाएं देखने को मिलती हैं। इथियोपियाई रूढ़िवादी चर्च परंपरा 'चर्च वन', पूजा स्थलों के आसपास के पवित्र उपवनों का रखरखाव करती है। ये वन आध्यात्मिक श्रद्धा और समृद्ध जैव विविधता का एक अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करते हैं। हमारे देश के कोने-कोने में असंख्य मंदिरों में वन देवताओं की पूजा की जाती है। ऐसे वन मंदिरों की ओर पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करने वाले सांस्कृतिक रास्ते ग्रामीण आध्यात्मिकता की संपदा के बारे में उनकी जागरूकता को समृद्ध कर सकते हैं।

भारत का ग्रामीण परिदृश्य जीवंत प्रदर्शन कलाओं से जीवंत है, जो इसके समुदायों की आत्मा में एक खिड़की पेश करते हैं। प्राचीन किंवदंतियों को दोहराने वाले लयबद्ध



पुष्कर मेला, राजस्थान

नृत्यों और नाटकों से लेकर विरासत में मिले लोक गीतों की भावपूर्ण धुनों तक, ये कला रूप किसी क्षेत्र की पहचान के ताने-बाने में महत्वपूर्ण सूत्र बनाते हैं। लोक नृत्य, संगीत, नाटक और कठपुतली सांस्कृतिक विरासत को जीवंत बनाते हैं। ओडिशा में एक निशान गतिशील 'डंडा नाता' के प्रदर्शन के आसपास केंद्रित हो सकता है (डंडा नाता एक लोक नृत्य है जो गंजम क्षेत्र की समृद्ध लोक परंपरा का हिस्सा है। यह एक गीत और नृत्य प्रदर्शन है जो केवल संगीत वाद्ययंत्र के रूप में झांझ का उपयोग करता है। नृत्य भगवान कृष्ण की कहानी बताने और भगवान शिव और देवी काली के प्रति भक्ति दिखाने के लिए प्रदर्शन किया जाता है), जबकि राजस्थान के अनुभव में न केवल ब्लॉक-प्रिंटरो को काम करते हुए देखना शामिल हो सकता है, बल्कि मांगनियार संगीतकारों को पीढ़ियों से चली आ रही धुनों को सुनना भी शामिल हो सकता है।

सांस्कृतिक पर्यटन पथ में विविधता : सांस्कृतिक पर्यटन पथ में जीवन के विभिन्न लोकरंग समाहित होते हैं। यह किसी विशिष्ट शिल्प के इतिहास, स्थानीय त्यौहार के विकास, या लोगों और उनकी भूमि के बीच जटिल संबंध को व्यक्त करता है। उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश में लिविंग ट्रेडिशन चंदेरी आगंतुकों को चंदेरी बुनाई के इतिहास और तकनीकों की यात्रा पर ले जा सकता है, जिसमें कारीगरों के कौशल और कपड़े में बुने गए जटिल

रूपांकनों का प्रदर्शन किया जा सकता है। बंगाल, झारखंड और ओडिशा में छाऊ नृत्य के शक्तिशाली रूप दैनिक जीवन के साथ-साथ पौराणिक आख्यानों एवं महाकाव्य के जीवन की कहानियां भी बताते हैं।

सम्मानजनक अन्वेषण : ध्यान हमेशा वास्तविक आदान-प्रदान और परंपराओं के सम्मान पर होना चाहिए। आगंतुकों को इन सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को आकार देने वाले कौशल, विश्वास और दैनिक जीवन में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सक्षम होना चाहिए। ग्रामीण कला आम आदमी की कच्ची जीवनशैली से उभरी और जरूरी नहीं कि इसका उद्देश्य प्रोसेनियम सेटिंग हो; इस प्रकार प्रारंभिक निर्णय यह हो सकता है कि मंचित प्रदर्शन या अप्रामाणिक अनुभवों से संभवतः बचा जाना चाहिए। सांस्कृतिक रास्ते तब फलते-फूलते हैं जब वह प्रामाणिक अनुभव प्रदान करते हैं जो वास्तव में किसी स्थान की आत्मा को दर्शाते

हैं। पर्यटक स्थानीय समुदायों और उनके जीवन के तरीकों के साथ वास्तविक जुड़ाव चाहते हैं। पथ को किसी स्थानीय उत्सव के साथ मेल खाने के लिए डिजाइन किया जा सकता है। किसी उत्सव को उसके पारंपरिक स्वरूप में व्यवस्थित रूप से प्रकट होते देखना- चाहे वह पुष्कर मेले की ऊंट दौड़ हो या जैसलमेर में डेजर्ट फेस्टिवल में लोक नृत्य- एक कृत्रिम वातावरण में दोहराने के लिए असंभव समझ की गहराई प्रदान करता है। सफल सांस्कृतिक पथ में स्थानीय समुदाय के साथ और उनके द्वारा तैयार कृतियों की प्रमुखता होती है। समुदाय के सदस्यों को योजना, प्रबंधन और पथ से प्राप्त लाभों में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए। इससे कलाकारों, स्थानीय शिल्पकारों एवं पर्यटन उद्योग से जुड़ी प्रतिभाओं की सहभागिता सुनिश्चित होती है। अंततः वह पर्यटन राजस्व के प्राथमिक लाभार्थी के रूप में उभरते हैं।

विभिन्न प्रकार के पर्यटकों को आकर्षित करने और समुदाय के लिए व्यापक लाभ सुनिश्चित करने की कुंजी पहुँच मार्ग का सुविधाजनक होना है। विशेष रूप से विकलांग लोगों के लिए सांस्कृतिक पर्यटन पथ और स्थलों की भौतिक पहुँच से जुड़े पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिए। जानकारी को कई भाषाओं में उपलब्ध कराने, साइनेज उपलब्ध कराने और स्थानीय गाइडों को प्रशिक्षित करने से पर्यटन को समावेशी रूप दिया जा सकता है। यहां

तक की पर्यटन सुविधाएं सामर्थ्य और विभिन्न आय क्षमता को पूरा करने वाली हों।

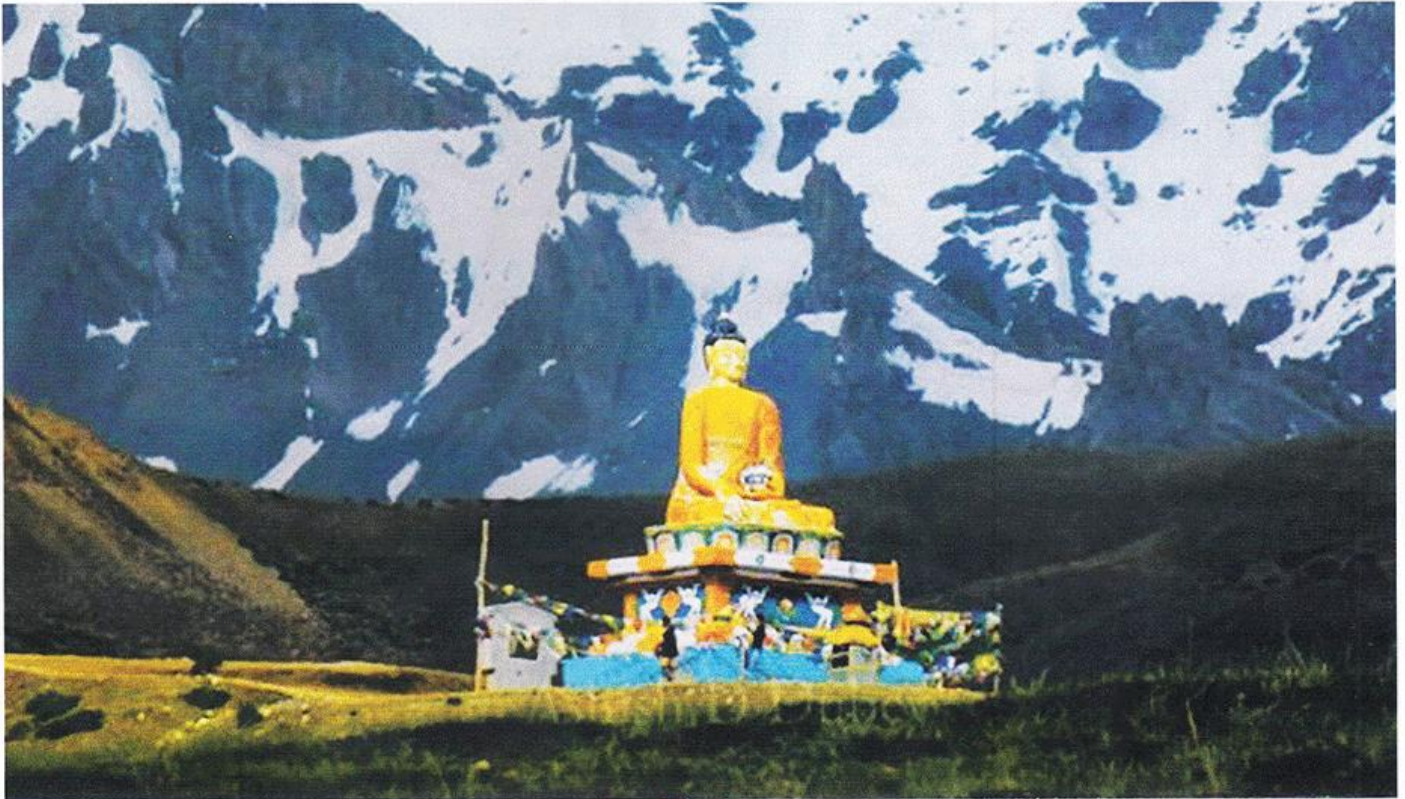
एक सफल सांस्कृतिक पथ के मूल में स्थिरता होनी चाहिए। इसका मतलब पर्यटन को इस तरह से प्रबंधित करना है जिससे प्राकृतिक पर्यावरण के साथ-साथ समुदाय के सांस्कृतिक ताने-बाने की भी रक्षा हो सके। आगंतुकों की संख्या सीमित करने, पर्यावरण के प्रति जागरूक प्रथाओं को बढ़ावा देने और स्थानीय संसाधनों पर पर्यटन के नकारात्मक प्रभावों को कम करने जैसी रणनीतियों पर चर्चा करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

पर्यटन के स्पष्ट दायरे से परे सोचना

इसमें कम-ज्ञात आकर्षणों और स्थलों की संभावनाओं को पहचानना और उनका दोहन करना शामिल है जो पर्यटक पहल पर विचार करते समय तुरंत दिमाग में नहीं आते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण प्रकाशस्तंभ है, जो किसी क्षेत्र के समग्र पर्यटन परिदृश्य में योगदान करते हुए पर्यटकों के लिए अद्वितीय और सम्मोहक अनुभव प्रदान कर सकता है। पारंपरिक रूप से जहाजों का मार्गदर्शन करने और समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बनाए गए प्रकाशस्तंभ ऐतिहासिक, स्थापत्य और सांस्कृतिक महत्व रखते हैं। यह अक्सर ऊबड़-खाबड़ समुद्र तटों पर एकान्त प्रहरी के रूप में खड़े रहते हैं, जो लुभावने दृश्य और समुद्री इतिहास की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। हाल के वर्षों में, कई देशों ने इन संरचनाओं की पर्यटन क्षमता को पहचानना शुरू कर दिया है

और लाइटहाउस पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पहल विकसित की है।

उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में, राष्ट्रीय उद्यान सेवा कई ऐतिहासिक प्रकाशस्तंभों का प्रबंधन करती है जो पर्यटन के लिए खुले हैं। पर्यटक नेविगेशन में प्रकाशस्तंभों की भूमिका के बारे में जान सकते हैं, इन संरचनाओं की अनूठी वास्तुकला का पता लगा सकते हैं और आसपास के परिदृश्य के मनोरम दृश्यों का आनंद ले सकते हैं। निर्देशित पर्यटन के अलावा, कुछ प्रकाशस्तंभ रात्रि विश्राम की पेशकश करते हैं, जिससे आगंतुकों को एक गहन अनुभव और तटीय वातावरण के एकांत और सुंदरता की सराहना करने का मौका मिलता है। इसी तरह, भारत में, अपनी विशाल तटरेखा और समृद्ध समुद्री इतिहास के साथ, प्रकाशस्तंभ पर्यटन के महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं। लाइटहाउस पर्यटन को बढ़ावा देकर, अधिकारी समुद्री विरासत, वास्तुकला और तटीय परिदृश्य में रुचि रखने वाले आगंतुकों को आकर्षित कर सकते हैं। प्रकाश स्तंभों पर आयोजित निर्देशित पर्यटन, शैक्षिक कार्यक्रम और सांस्कृतिक कार्यक्रम आगंतुकों के अनुभवों को बढ़ा सकते हैं और स्थानीय ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं में योगदान कर सकते हैं। अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के साथ भारत का तट, प्रकाशस्तंभों से भरा हुआ है जो न केवल नौवहन सहायता के रूप में काम करते हैं बल्कि ऐतिहासिक और स्थापत्य महत्व भी रखते हैं। तमिलनाडु में पूम्पुहार के प्राचीन बंदरगाह और वहां के लाइटहाउस,



लाहौल स्पीति, हिमाचल प्रदेश



अलाप्पुझा लाइटहाउस, केरल

कर्नाटक में कौप लाइटहाउस और केरल में अलाप्पुझा लाइटहाउस सहित स्थानों को आकर्षक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है। यह समुद्री इतिहास की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं और समुद्र तट के मनोरम दृश्य उपलब्ध होंगे।

प्रकाशस्तंभों के अलावा, ऐसे कई अन्य वंचित मामले हैं जिनमें पर्यटन विकास के लिए अप्रयुक्त संभावनाएं हैं। इनमें शामिल हो सकते हैं:

औद्योगिक विरासत स्थल : पूर्व औद्योगिक स्थल, जैसे पुराने कारखाने, खदानें और गोदाम, किसी क्षेत्र के औद्योगिक इतिहास में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। विरासत और औद्योगिक पुरातत्व में रुचि रखने वाले पर्यटकों को ये स्थल दिलचस्प लग सकते हैं। भारत में, समृद्ध औद्योगिक विरासत वाले कई क्षेत्र हैं जिन्हें पर्यटन के लिए विकसित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जर्मनी में रूहर क्षेत्र ने अपनी पूर्व कोयला खदानों और इस्पात संयंत्रों को सांस्कृतिक आकर्षणों में बदल दिया। इसी तरह, झारखंड में जमशेदपुर जैसे क्षेत्र, जो अपने इस्पात उद्योग के लिए जाना जाता है, और पश्चिम बंगाल में रानीगंज, जो भारत के सबसे पुराने कोयला खनन क्षेत्रों में से एक है, औद्योगिक विरासत पर्यटन पहल विकसित

कर सकते हैं। पुराने कारखानों, खदानों और गोदामों के दौरे के साथ, इन उद्योगों के इतिहास और विकास को प्रदर्शित करने के लिए पर्यटन का आयोजन किया जा सकता है। स्थानीय समुदायों पर इन उद्योगों की तकनीकी प्रगति और सामाजिक प्रभाव के बारे में पर्यटकों को शिक्षित करने के लिए व्याख्यात्मक केंद्र या संग्रहालय स्थापित किए जा सकते हैं।

कृषि पर्यटन : कृषि परिदृश्य और कृषि परंपराओं वाले ग्रामीण क्षेत्र पर्यटकों के लिए प्रामाणिक और गहन अनुभव प्रदान कर सकते हैं। फार्म स्टे, कृषि पर्यटन और फसल उत्सव जैसी गतिविधियाँ पर्यटकों को खेती के तरीकों के बारे में जानने, स्थानीय किसानों के साथ बातचीत करने और खेत की ताजा उपज का आनंद लेने की अनुमति देती हैं। यह इको टूरिज्म को भी नया आयाम प्रदान करेगा। प्रोवेंस, फ्रांस में लैवेंडर फ़ील्ड और नापा वैली, कैलिफ़ोर्निया के अंगूर के बाग, कृषि पर्यटन स्थलों के उदाहरण हैं। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों, विशेष रूप से पंजाब, महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्यों में, जीवंत कृषि परिदृश्य और कृषि परंपराएं हैं। ये क्षेत्र फार्म स्टे, कृषि पर्यटन अनुभव और फार्म-टू-टेबल डाइनिंग अनुभव प्रदान करके कृषि पर्यटन को बढ़ावा दे सकते हैं। आगंतुकों को टिकाऊ

कृषि पद्धतियों, जैविक खेती तकनीकों और पारंपरिक कृषि विधियों के बारे में सिखाने के लिए शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

डार्क स्काई पर्यटन : न्यूनतम प्रकाश प्रदूषण वाले क्षेत्र तारा-दर्शन और खगोल विज्ञान पर्यटन के लिए आदर्श हैं। डार्क स्काई रिजर्व और वेधशालाएं आगंतुकों को खगोलीय घटनाओं को देखने, खगोल विज्ञान के बारे में जानने और रात के आकाश की सुंदरता का अनुभव करने का अवसर प्रदान करती हैं। इंटरनेशनल डार्क-स्काई एसोसिएशन दुनिया भर में डार्क स्काई स्थानों को नामित करता है, जैसे कि आयरलैंड में केरी इंटरनेशनल डार्क स्काई रिजर्व। भारत में कई ग्रामीण क्षेत्र हैं जहां न्यूनतम प्रकाश प्रदूषण है, जो उन्हें अंधेरे आकाश पर्यटन के लिए आदर्श बनाता है। उदाहरण के लिए, जम्मू-कश्मीर में लद्दाख, हिमाचल प्रदेश में स्पीति घाटी और ग्रामीण राजस्थान के कुछ हिस्से तारा-दर्शन और खगोल विज्ञान पर्यटन के लिए उत्कृष्ट अवसर प्रदान करते हैं। स्थानीय समुदाय तारों को देखने के दौरों और खगोल विज्ञान कार्यशालाओं की सुविधा के लिए डार्क स्काई रिजर्व या वेधशालाएँ स्थापित कर सकते हैं। ग्रामीण परिवेश में गहन अनुभव चाहने वाले खगोल पर्यटकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए इको-लॉज या होमस्टे जैसे आवास विकल्प विकसित किए जा सकते हैं।

सामुदायिक भागीदारी से ग्रामीण पर्यटन बनेगा समावेशी

टिकाऊ ग्रामीण पर्यटन के लिए स्थानीय समुदायों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। सामुदायिक भागीदारी स्थानीय मूल्यों और जरूरतों के साथ तालमेल सुनिश्चित

करती है। यह स्वामित्व और जिम्मेदारी को बढ़ावा देती है। सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण परंपराओं को पुनर्जीवित करने और कारीगरों को समर्थन देने की कुंजी है। पर्यावरण संरक्षण अभिन्न अंग है, ग्रामीण परिदृश्य और जैव विविधता की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार प्रथाओं को बढ़ावा देना। क्षमता निर्माण स्थानीय लोगों को रोजगार और उद्यमिता के लिए कौशल प्रदान करता है। लाभों का समान वितरण असमानताओं को कम करते हुए समावेशी विकास सुनिश्चित करता है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान आपसी समझ और सम्मान को बढ़ावा देता है, जिससे पर्यटक और मेजबान दोनों समृद्ध होते हैं। दीर्घकालिक स्थिरता के लिए व्यापक योजना, हितधारक सहयोग और प्रभावों की निगरानी की आवश्यकता होती है। इन प्रयासों के माध्यम से, ग्रामीण पर्यटन सकारात्मक परिवर्तन, संस्कृति के संरक्षण, समुदायों का समर्थन और पर्यावरण के संरक्षण के लिए उत्प्रेरक के रूप में पनप सकता है।

स्थायी ग्रामीण पर्यटन को लागू करने में, सामुदायिक भागीदारी सर्वोपरि है, स्थानीय मूल्यों के साथ संरेखण सुनिश्चित करना और स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देना है। सांस्कृतिक संरक्षण पहल, जैसे विरासत संरक्षण परियोजनाएं और सांस्कृतिक त्यौहार, स्थानीय परंपराओं को बढ़ावा देने के साथ-साथ पर्यटकों के अनुभवों को समृद्ध करते हैं। अपशिष्ट प्रबंधन और टिकाऊ परिवहन जैसे पर्यावरण संरक्षण उपाय ग्रामीण परिदृश्य और जैव विविधता की सुरक्षा करते हैं। क्षमता निर्माण स्थानीय लोगों को रोजगार और उद्यमिता के लिए कौशल प्रदान करता है। यह पर्यटन उद्योग के समावेशी विकास में योगदान देता है। इन रणनीतियों को अपनाने से, ग्रामीण पर्यटन सकारात्मक बदलाव, संस्कृति के संरक्षण, समुदायों का समर्थन और पर्यावरण के संरक्षण के लिए उत्प्रेरक बन जाता है। निरंतर सहयोग और स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से, ग्रामीण गंतव्य आगे बढ़ सकते हैं। यह पर्यटकों को प्रामाणिक अनुभव प्रदान करते हैं। यह आगंतुकों और स्थानीय निवासियों दोनों के हित में है। पर्यटकों को अपनी अगली यात्राएं आरक्षित करने से पहले, उन्हें जागरूक पर्यटन की शक्ति पर विचार करना चाहिए और ऐसे गंतव्यों और अनुभवों का चयन करना चाहिए जो ग्रामीण समुदायों का उत्थान करें और उनकी बहुमूल्य सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करें।

